बंदूकबाज़ की धाय धाय और सेंसरबोर्ड

मनीष कुमार जैसल

डिपार्टमेंट आफ परफार्मिंग आर्ट्स,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विवि, वर्धा
मो. 09616730363

लीड एक्ट्रेस बिदिता बाग अपनी फेसबुक प्रोफाइल के स्टेटस में लिखती है कि एक्टर एट द मर्सी ऑफसीबीएफ़सी। जी हाँ ऐसे कई नये कलाकार सीबीएफ़सी के फैसलों की भेंट चढ़ जाते है और गुमनामी में जीते हैं। खुद नवाजुद्दीन सिद्दीकी भी 12 साल के अपने सिने कैरियर में उसी तरह खोये रहते अगर अनुराग कश्यप की फिल्म गैन्स ऑफ वासेपुर सीबीएफ़सी सिपाहियों द्वारा पूर्ण प्रतिबंधित कर दी गयी होती। फिल्म के लिए अनुराग ने काफी मेहनत की और उसका नतीजा आज हम सब के सामने है।

निर्देशक : कुशान नंदी

कास्ट : नवाजुद्दीन सिद्दीकी, बिदिता बाग, दिव्या दत्ता, मुरली शर्मा, जतिन गोस्वामी, श्रद्धा दास, भगवान तिवारी

कार्निवाल सिनेमा में बाबू मोशाय बंदूकबाज़ देखने गया। फिल्म के संदर्भ में यह पहले ही मीडिया की सुर्ख़ियों ने बता दिया था कि यह 18 वर्ष के ऊपर की आयु वर्ग के लिए ही उचित है। कार्निवाल सिनेमा अपने ही विज्ञापन में जिस प्रकार से यह दिखाने का प्रयास करता है कि एक बच्चा जिस पर सिनेमा का प्रभाव इस कदर है कि सत्तर और अस्सी के दशक की फिल्मों के संवाद उसके जीवन का हिस्सा बन चुका है । इसी विज्ञापन में एक महिला द्वारा उसके नाम पूछे जाने पर वो कहता है नाम-राहुल, पूरा नाम राहुल चटोपाध्याय, बाप का नाम अमित चटोपाध्याय, माँ का नाम रेखा चटोपाध्याय, कुत्ते का नाम टामी बीप... उम्र आठ साल, दो महीने, तीन हफ्ते, तभी उसकी माँ आती है तब वो कहता है कि ये सिनेमा हॉल है तुम्हारे बाप का घर नहीं,जब तक बैठने को कहा न जाएँ तब तक मत बैठना, फिर फेड इन में थप्पड़ की आवाज़। यह विज्ञापन बच्चों पर पड़ रहे सिनेमा के असर का चित्रण करता है। और उनके परिवार द्वारा सिखाये जा रहे नैतिकता के पाठ को भी दर्शाती है ।

बीप की आवाज़ पर गौर करें तो कुत्ते का नाम किसी आदमी के नाम पर रखा